IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, June 2022
Impact Factor: 6.252

शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना : एक अध्ययन

Prof. Shipra Dwivedi[1] and Vivekanand Pandey[2]
Professor, Department of Hindi[1]
Research Scholar, Department of Hindi[2]
Government Thakur Ranmat Singh College, Rewa, Madhya Pradesh, India[1]
Awadhesh Pratap Singh University, Rewa, Madhya Pradesh, India[2]

प्रस्तावना–

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं। प्रकृति–पुरुष दोनों ही महत्वपूर्ण हैं।समाज में रहकर ही दोनों अपने कार्यों, इच्छाओ, लक्ष्यों को पूरा कर सकते हैं।मनुष्य समाज कोंआगे बढ़ाने के लिए स्त्री– पुरुष दोनों की भागीदारी समान रूप से आवश्यक हैं।दोनों में से एक भी पक्ष कमजोर हो गया तो मानव समाज का योग्य विकास नहीं होगा,बल्कि अहित होगा।

मनुष्य समाज का आधा अंग नारी है।शिवानी साहित्य में नारी चेतना को अध्ययन का विषय बनाया गया है।विश्व में स्त्री–पुरुष हैं,मगर दोनों सदैव एक जैसे ही नहीं होते दोनों में विभिन्न विशेषताएँ,योग्यताएँ, कमजोरियाँदेखने को मिलती हैं। प्रत्येक स्त्री, प्रत्येक पुरुष समान नहीं होते।फिर–भी सदियों से सिर्फ नारी को ही कमजोर मानकर शोषण का शिकार बनाया गया । लाचार, असहाय, विवश, दमित, दलित अवस्था में रखा गया।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

[1]. भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र– डॉ. एम.एम. लवानिया
[2]. भारतीय समाज में नारी– डॉ. नीरा देसाई
[3]. हिंदी साहित्य का आधा इतिहास– डॉ. सुमन राजे
[4]. महादेवी वर्मा साहित्य समग्र–3– सं. – निर्मला जैन